International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 7 July 2022, pp: 1137-1138 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

पाठ्यक्रम में निहित लिंग–भेद

डॉ० इन्द्रजीत कौर (प्रौफेसर)
मोनालिका सिंह

Submitted: 10-07-2022 Revised: 18-07-2022 Accepted: 23-07-2022

प्रस्तुत भोध में लिंग भेद पर अध्ययन लिखा गया है, चूंकि द ाकों पूर्व से लेकर आज भी नारी को दोयम दर्जे का माना जाता रहा है। हालांकि पंचवर्शीय योजनाओं, ि ाक्षा समितियों तथा ि ाक्षा नीतियों में लिंग भेद को दूर करने एवं लिंग समानता लाने के प्रयास किए है। इसी विशय पर पाठ्यक्रम में लिंग भेद किस प्रकार सम्मिलित है, इसी पर अध्ययन किया गया है।

भारतीय संविधान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तीन मुद्दे वर्णित है :–

1. लोकतन्त्र।
2. पंथ निरपेक्षता।
3. सामाजिक न्याय।

और इन सभी मूल्यों को भौक्षिक रूप में स्थापित करने के लिए आव यक है कि ि ाक्षा से सम्बन्धित सभी स्तरों को किसी भी तरह के भेद से निरपेक्ष बनाया जाए। ि ाक्षा में इन सभी उद्दे यों को ि ाक्षार्थियों तक पहूँचाने की महत्वपूर्ण कड़ी ''पाठ्यक्रम'' है। पाठ्यक्रम भौक्षिक प्रक्रियाओं का वह महत्वपूर्ण हिस्सा है जिससें छात्रों के जीवन में सम्पूर्ण अनुभवों का समावे ा किया जाता है। भारतीय ि ाक्षा व्यवस्था का अपना एक औपनिवे ि ाक इतिहास रहा है। जिसमें पाठ्यक्रम के स्तर पर इस तरह की बातों का समावे ा होता है जो इस ऐतिहासिक रूप से प्रदत्त मानसिकता में आगे ले जाती रही है। इसलिए राश्ट्रीय ि ाक्षा नीति 1986 का प्रत्येक दस्तावेज ऐसे मूल्यों की चर्चा ि ाक्षा में उद्दे यों के रूप में भरता रहा हे जो स्वतन्त्रता और समानता के मूल्यों को व्यक्तिगत जीवन का हिस्सा बना सकें। चूंकि हम भारतजैसे दे ा मे रहते है जहॉ भौगोलिक क्षेत्रों से लेकर लोगों मे रहन–सहन, आचार–विचार, वि वास आदि सांस्कृतिक विविधताओं के साथ–साथ जाति, धर्म व लिंग सम्बन्धित भिन्नताओं का वातावरण है। ऐसे विविध दे ा में ि ाक्षा में समानता और विविधताओं को समावे ा करते हुऐ संविधान की गरिमा को बनायें रखना अपने आप में एक जटिल, संवेदन ाील और गम्भीर मुद्दा है।

उद्दे य:–

1. लिंग सम्बन्धी अवधारणा के जाति, धर्म, वर्ग व क्षेत्र के संस्थाबद्ध चरित्र को जानना।
2. पाठ्यक्रम की लिखित और प्रछन्न/छिपी अवधारणा को जानना।
3. पाठ्य–पुस्तकों और कक्षागत अभ्यासों में निहित लिंग के मुद्दों को पहचानना
4. पाठ्यक्रम में निहित जीवन कौ ालों और योनिकता के मुद्दों का जानना।

पाठ्यक्रम की अवधारणा:–

पाठ्यक्रम से अभिप्राय उन सभी भौक्षिक गतिविधियों से जिसमें बच्चे के सभी अनुभवों को समाहित किया जाता है, इसकी परिभाशा इस प्रकार है:–

Mkuchu(2004)– पाठ्यक्रम से अभिप्राय उन सभी योजित गतिविधियों से है, जिन्हें एक स्कूल अपने अधिगम कर्ता के लिए सुनि चित करता है, इसके लिए पाठ्यक्रम में अनुभव कर्ता के प्रत्येक अनुभव को सम्मिलित किया जाता है।

प्रच्छन्न/छिपा पाठ्यक्रम:–

इस पाठ्यक्रम से अभिप्रया ऐसे पाठ्यक्रम से है जो कही लिखित नही होता लेकिन स्कूल की गतिविधियों मे परोक्ष रूप से भागिल होता है। Dwyer 1982 and Prnit 1987के अनुसार पाठ्यक्रम के आपैचारकि व लिखित रूप से इतर भी एक रूप है जिसे 'छिपा पाठ्यक्रम' कहा जाता है, इस तरह के पाठ्यक्रम के अनियत प्रभाव भागिल होते है परन्तु यह कभी स्पश्ट कहें नहीं जातें। इसमें सीखने के अनौपचारिक तत्व भागिल होते है। छिपा पाठ्यक्रम नॉन अकादमिक व स्थापित मान्यताओं व अधिगम उत्पदों को आकार देता है।

Writ (1997)ने बताया कि छिपा पाठ्यक्रम एक प्रकार का भाक्ति ाली तरीका है जो सूक्ष्म रूप से ि ाक्षक और छात्रों को प्रभावित करता है। इन सूक्ष्म रूपों के प्रति ि ाक्षक व ि ाक्षार्थी सचेत भी नहीं होते है। छिपा पाठयक्रम एक समय पद उद्दे ि ात पाठ्यक्रम से अलग होता है। यह स्कूल की सामान्य और वि ोश प्रक्रियाओं में व्यक्त होता है।

विद्यालय में लिंग भेद के उदारहण:–

1. स्कूल में सुबह प्रार्थना सभा के दौरान लड़के व लड़कियों का अलग
2. कक्षा में बैठने के दौरान लड़के व लड़कियों की अलग–अलग व्यवस्था का होना।
3. स्कूल में साज सज्जा के कार्य सामान्यतः लड़कियों द्वारा किया जाना।
4. स्कूल में भरी भरकम सामान्यतः लड़कों द्वारा किया जाना।
5. स्कूल में राश्ट्रीय त्योहारों के अतिरिक्त किन त्योहारों की वि ोश रूप से मनाया जाता हैं
6. स्कूल में जो बच्चे उनके घर में बोली जाने वाली भाशा का इस्तेमाल करते है उनको किस तरह से देखा जाता हैं
7. स्कूल में जब छात्रवृति के बटवारे के लिए 'आरक्षित' श्रेंणी के छात्रों/छात्राओं को किस तरह का संबोधित किया जाता है।
8. स्कूल में गृह विज्ञान का विशय कौन से बच्चे ले सकते है आदि–आदि।

जब इन घटनाओं पर विचार करेंगे तो सम्भवतः इस तरह के जवाब पाए कि सभा में लड़के व लड़कियों की पंक्तियॉ अलग–अलग बनाई जाती है, कक्षा में लड़के व लड़कियां अलग–अलग बैठती है, भारी भरकम कार्य लड़के करते हो और लडकियां साज सज्जा के कार्य करती थी, स्कूल में प्रायः उन त्योहारों को मनाया जाता हो जिस त्यौहार को मनाने वाले ि ाक्षक व बच्चें ज्यादा हो और अल्पसंख्यक वर्ग के त्यौहार नही मनायें जाते हो, स्कूल में जो बच्चें अपने घर पर बोली जाने वाली भाशा उसका का प्रयोग करते है उन्हें व्यवहारिक रूप से कमतर होने का बोध किया जाता हों।

छात्रवृति वितरण के समय बच्चों को उनकी जाति के आधार पर 'निम्न' होने का बोध कराया जाता हो और गृह विज्ञान विशय को केवल लड़कियों के लिए अनिवार्य किया जाता हो।

यह कुछ ऐसी घटनायें है जो संभवतः आपने अपने स्कूल के दिनों में या सामान्यतः स्कूलों की दैनिक प्रक्रिया में अवलोकन की हो। इस तरह का व्यवहार किसी इस राश्ट्रीय

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 7 July 2022, pp: 1137-1138 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

नीतिगत व दि ाानिर्दे ाक दस्तावेज में लिखित नहीं है लेकिन व्यवहारगत रूप से स्कूल में इस तरह के व्यवहार को जा सकता है। स्कूल में व्यवहारगत स्तर पर की जाने वाली ये चीजें समाज की पारंपरिक मान्यताओं को ही पुश्ट करती है। यदि जेंडर भेदभाव के संदर्भ में बात करें तो स्कूल में होने वाली दैनिक क्रियाओं से लेकर पाठयपुस्तकों की विशय वस्तु, चित्र और भाशा में यह भेद दिखाई देता है। यदि आप 2005 के पहले की किसी भी पुस्तक को देखें तो आप इस अंतर स्वयं भी देख सकते है। जिनमें आप देख पायेंगें वि ोशतः भाशा की पाठय पुस्तकों में पुरूशों से सम्बन्धित कहानियॉ, जीवनियॉ व वृतांत है, इसके अतिरिक्त 'पुरूशत्व' चित्र अधिक है जो कक्षा और ि ाक्षा के क्षेत्र में लड़की व स्त्रियों के स्थान को सीमित करती है और लिंग पूर्वाग्रह और मान्यताओं को बढ़ावा देती है प्रायः पाठ्यपुस्तकों से किसी वि ोश समूह को अदृ य रखा जाता है और महिलाओं को भी अदृ य रखा जाता है। Schau 1994 पाठय–पुस्तकें पूर्वाग्रहों से भरी होती हैं जिनमें पुरूशों की तुलना में स्त्रियों का चित्र कम होता है। इस तरह लगातार महिलाओं का बहिश्करण होता रहता है।Koza;1994 अधिकां ा दे ाों की 51 प्रति ात नागरिक स्त्रियॉ है और उन्हें ही पाठयपुस्तकों से बाहर रखा जाता है। Yin; 1990 इस प्रकार छिपा पाठ्यक्रम गतिविधियों व पाठय पुस्तकों के माध्यम से तमाम तरह से यथास्तिथि (अर्थात् समाज के ढ़ांचे को ज्यों का त्यों बनाये रखना) को स्थापित करने का कार्य करता है। जैसे की माइकल एप्पल ने अपने लेख 'आइडियोलोजी एंड करिकुलम में कहा है कि छिपा पाठयक्रम पूंजी वादी व्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है। (1982)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीनिवासन एम.एन. (1967), आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रका ान, नई दिल्ली।
2. कुमार कृश्ण (2010), कल्चर, स्टेट एंड़ गल्सः एन एजुके ानल पर्सपेक्टिव, इकोनोमिक पोलिटिकल वीकली वोलुम 17।
3. कुमार कृश्ण (2016), स्टडिंग चाइल्ड हुड इन इंडिया, इकोनोमिक पोलिटिकल वीकली, वोलुम 23।
4. कुमार कृश्ण (2014), चूड़ी बाजार में लड़की, राजकमल प्रका ान, दिल्ली।
5. दुबे एस.सी. (1985), भारतीय समाज, ने ानल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
6. दुबे लीला (1988), ओन द कंस्ट्रक्ान ऑफ जेंडरःहिन्दू गर्ल्स इन पेट्रीलिनेअल इंडिया, इकोनोमिक पोलिटिकल वीकली वोलुम 23, संख्या 18।
7. बर्क लौरा (2006) चाइल्ड डेव्लोपमेंट, पिअरसन एजुके ान, साऊथ ए िाया।
8. राश्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005), एन.सी.इ.आर.टी. नई दिल्ली।
9. आधार पात्र।
10. माइकल एप्पल।